

प्रयोजन मूलक प्रमाण की विशेषताएँ  
इस.

अर्थात् इसमें रचना से रचयिता का अनुमान होता है।

(2) इस प्रमाण से व्यक्तित्व पूर्ण ईश्वर के सत्ता की सिद्धि होती है क्योंकि व्यवस्था व प्रयोजन संकल्प एवं चेतना का परिणाम है।

(3) इस प्रमाण के द्वारा यह बताने का प्रयास किया गया है कि यह विश्व कतना सुव्यवस्थित स्यों है।

ऐम्बिनाश के अनुसार प्राकृतिक वस्तुएँ अवोध हैं। इसलिये इनका कोई व्यक्तिगत उद्देश्य नहीं हो सकता परंतु ये अवोध वस्तुएँ किसी न किसी प्रयोजन पूर्ण में लगी हैं इससे यह सिद्ध होता है कि संसार की अवोध वस्तुओं का कोई नियामक अवश्य है जो इसके माध्यम से लक्ष्य की पूर्ति कर रहा है। यह नियामक कारण ईश्वर है। ईश्वर ही अवोध वस्तुओं का निर्देशन कर रहा है।

छुट्टिवाड़ी दार्शनिक लाइबेनीज के अनुसार अध्यापी मोनड स्वतंत्र, पूर्ण एवं गवाहहीन है परंतु उनमें परस्पर सामंजस्य दिखाई देता है। ईश्वर ही मोनडों (window class) को रचना करते समय ऐसा सामंजस्य भाँटता है कि एक में परिवर्तन होने पर दूसरे में भी तदनु रूप परिवर्तन होने लगता है। इस प्रकार यह पूर्व-स्थापित सामंजस्य के नियम के व्यवस्थापक के रूप में ईश्वर की भत्ता है। सिद्ध किया गया है।

जेम्स मरिन्स के अनुसार निम्न व्यवस्था में अनुक्रम (sequence) combination (upgradation)



जाया जाता है। उस व्यवस्था में बुराई व संकल्प की  
प्रतिक्रिया अवशाय होती है। संसार के विभिन्न जलवायु  
प्रदेशों में रहने वाले जीवों के संग प्रत्यंगों में ये  
जीवों चीजे दिखती देली है यह सिद्ध करता है कि  
विश्व का रचयिता कोई अली बुद्धिमान सत्ता अर्थात् ईश्वर ही है।

विलियम पैली घड़ी के उदाहरण के द्वारा इस तर्क  
का समर्थन करते हैं घड़ी का दृष्टांत देते हुये वे यह  
कहते हैं कि जितना प्रकार कीनी निर्जन क्षेत्र में किसी  
घड़ी को पाकर उसकी व्यवस्था एवं नियमितता को देखकर  
हम मंत्रकार (घड़ीसाज) की कल्पना कर लेते हैं वही  
प्रकार विश्व की व्यवस्था नियमितता इत्यादि को देखकर विश्व  
की मंत्र के व्यवस्थापक एवं संयोजक के रूप में ईश्वर के  
अस्तित्व को अनुमानित कर लिया जाता है।

F. R. टेनेन्ट के अनुसार विश्व वस्तुतः मूल्यों एवं मापदण्डों  
पर आधारित है। टेनेन्ट यह कहते हैं कि मानव में  
आत्म संचालन अनुशासन प्रकृति का सौन्दर्य प्रेम  
कला सजनन प्रक्रिया इत्यादि को देखकर किसी महान  
बुद्धि युक्त सत्ता को अनुमानित किया जाता है। इसकी  
व्याख्या भौतिक नियमों या केवल जड़ पदार्थों की  
सत्ता को मानकर नहीं किया जा सकता इसकी  
व्याख्या हेतु अली बुद्धिमान परमसत्त्व अर्थात् ईश्वर को  
मानना आवश्यक है।

A. I - ब्राउन वायुमंडल की ऊपरी सतह (समताप मंडल)

में विद्यमान ओजोन परत की उपस्थिति के आधार पर  
ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने का प्रयास करते हैं।

भारतीय दर्शन में व्यापक वैशेषिक दर्शन का यह मानना  
है कि ईश्वर ही निषादिय परमाणुओं में गति का संचार  
कर इस प्रयोजन पूर्ण विश्व की रचना करता है।



शंकराचार्य व्यवहारिक दृष्टिकोण से व्यक्तित्व को ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करते हैं। इनके अनुसार ईश्वर अपनी माया शक्ति के द्वारा इस व्यक्तिव विश्व की रचना करता है।

### आलोचना

- (i) विश्व में व्यवस्था एवं प्रयोजन देखना एक व्यक्तिगत दृष्टिकोण है कोई व्यक्ति इसी विश्व में अव्यवस्था देख सकता है। पुनः कुछ मामलों/स्थलों पर व्यवस्था देखकर यह कहना की सम्पूर्ण विश्व में यह व्यवस्था है। संगत नहीं है।
  - (ii) रसेल के अनुसार लावणीज का पूर्व त्थापित सामंजस्य का नियम अर्थहीन है। इसे न तो सत्य सिद्ध किया जा सकता है। व न ही असत्य।
  - (iii) विलियम पैले का तर्क सामान्यानुमान (Analogy) पर आधारित है। यहाँ विश्व की उपमा घड़ी से की गई है जो कि दोषपूर्ण है। बहुराः सामान्यानुमान वही है वैध माना जाता है जहाँ उसके असंख्य उदाहरण हो एवं पुनरावृत्ति विद्यमान हो हम घड़ी के निर्माण के संदर्भ में कई उदाहरण पा सकते हैं, साथ ही इसकी पुनरावृत्ति भी संभव है। इसका मूलतत्त्व अनुभव पर आधारित है। इसी ओर विश्व की पुनरावृत्ति संभव नहीं है। इसके अनेक उदाहरण भी नहीं हैं। म्याग्ने विश्व एक है। पुनः विश्व का निर्माण करते हुये ईश्वर की कभी किसी ने देखा नहीं है। स्पष्ट है कि घड़ी की तुलना के आधार पर विश्व के निर्माण के रूप में ईश्वर की कल्पना युक्ति संगत नहीं है।
- पुनः यदि विश्व की घड़ी के समान माना जाये तो फिर नैतिकता, धार्मिकता, व



नित्यता की व्याख्या नहीं हो पायेगी।

II  
मोक्षमार्ग

इस प्रमाण में ईश्वर को एक शील्यकार के रूप में स्वीकार किया गया है। शील्यकार को निर्माता के रूप में बाह्य सामग्री पर निर्भर रहना पड़ता है। ऐसी स्थिति में ईश्वर की स्वतंत्रता पूर्णतः एवं सर्वशालिमानता आदि का खंडन होता है। अतः

यह अवधारणा आधुनिक विकासवादी व्याख्या के विपरीत है। विकासवादी अवधारणा के अनुसार यह विश्व व उसकी व्यवस्था क्रमिक विकास का परिणाम है।

जैन मतानुसार यदि ईश्वर पूर्ण

सर्वशालिमान एवं परम दयालु है तो फिर यहाँ यह प्रश्न उठता है कि आखिर किस प्रयोजन की सृष्टि के लिये ईश्वर ने इस जगत की रचना की है। यदि उसने स्वार्थवश इस जगत की रचना की है तो फिर उसे पूर्ण नहीं माना जा सकता पुनः यदि ईश्वर करुणावश इस जगत की सृष्टि करता है तो फिर इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता म्योर्डे करणा का अर्थ है - दूसरों के दुखों को दूर करने की इच्छा परंतु ऐसा नहीं माना जा सकता म्योर्डे

- यदि करुणावश जगत की सृष्टि की गई होती तो फिर संसार में आभाव अविधा मृत्यु उच्छिन्न वृथायाँ इत्यादि नहीं होती

- यदि ईश्वर में करुणा उत्पन्न होती है तो फिर इससे ईश्वर की पूर्णता एवं नित्यता का खंडन होता है।

- सृष्टि के पूर्व कोई जीव नहीं था ऐसी स्थिति में वही

की बात सर्थक रूप से स्वीकार नही की जा सकती।

1) न भगवानुसार यदि सृष्टिकर्ता के रूप में ईश्वर के अस्तित्व को माना जाये तो प्रश्न यह उत्पन्न होता कि वह शरीरी है या अमूर्त ईश्वर भगवानुसार रूप में इस जगत की सृष्टि नही कर सकता भगवानुसार यदि "शरीरी" है तो फिर

वह हाथ पैर आदि से युक्त होगा परंतु ऐसा मानने पर उसे नश्वर मानना पड़ेगा

हमारा शरीर हमारे पास एवं पुण्य कर्मों का होता है यहाँ प्रश्न यह है कि ईश्वर का शरीर किसका फल है यहां इस प्रश्न का संतोषजनक उत्तर नही मिल पाता

### महत्व

यह प्रमाण सर्वाधिक सहज, आकर्षक, लोकप्रिय धार्मिक दृष्टिकोण से अनुकूल प्रमाण है धार्मिक मान्यता को जीवंतता प्रदान करने में इस प्रमाण का महत्व है हम व काठ जैसे आलोचक भी इसकी प्रशंसा कर काठ के अनुसार यह उनके सदैव आदरपूर्वक उल्लेख

PATANJALI IAS CLASSES  
2580, HUDSON LINE  
MOB-09810172345

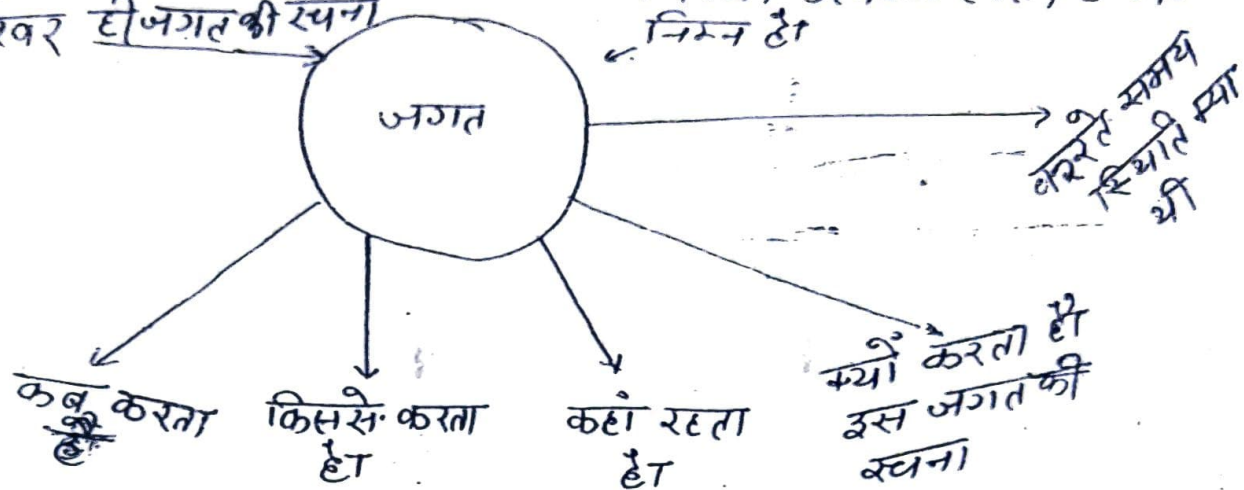


अगत स्वनाकार के कप में ईश्वर की कल्पना विरोधाभासे से युक्त है

धार्मिक

धार्मिक व्यक्ति मानता है कि ईश्वर ने ही अगत की रचना की है इससे सम्बंधित अगत की समझा उत्पन्न होती है जो निम्न है

ईश्वर ही अगत की रचना



तार्किक दृष्टिकोण से यह विरोधाभास से युक्त है

